Ministry of Culture
Government of India

साहित्य अकादेमी
(राष्ट्रीय साहित्य संस्थान)
संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार की स्वायत्तशासी संस्था
Sahitya Akademi
(National Academy of Letters)
An Autonomous Organisation of Government of India, Ministry of Culture

पल्लवी प्रशांत होळकर
सचिव

Pallavi Prashant Holkar
Secretary

Press Release

Sahitya Akademi organized Face-to-Face and Story Reading Programme

New Delhi, 11 January, 2026. Sahitya Akademi organized a Face-to-Face and Story Reading programmes during the New Delhi world Book Fair 2026 on 11th January 2026 in Hall No. 2 of Bharat Mandapam. In the Face-to-Face programme Rashmi Chaudhary, eminent Bodo writer and Sahitya Akademi award winner; and Mohan Singh, eminent Dogri writer and Sahitya Akademi award winner participated. Mohan Singh said he began his journey by following the masters of Dogri. He further said that being a writer is not about earning livelihood through writing but spending your earnings on writing. He spoke on his Nukkad Natakas and also recited few of his poems, namely 'Ghera', 'Shraap', 'Ma Ke Marne Par', 'Potiyan', 'Ilzam', 'Saath Na Chhod Dena, and 'Ped Aur Aadmi'. Rashmi Choudhary shared that she began writing in the year 2006 after going through a personal crisis. She further said through her writings she strives to highlight the plight of women in remote areas. She also recited her Bodo poems, 'Dalbar', 'Akeli', 'Chidiya Ud Gai' and 'Jeewan', followed by their Hindi rendition.

The Face-to-Face programme was followed by a Story Reading programme which was chaired by eminent Hindi writer Nasira Sharma. Avdhesh Srivastava and Harisuman Bisht participated in the reading. Avdhesh Srivastava narrated his story 'Khel Khel Mein' based on the innocent relationship developed between young kids of a residential colony and new-born puppies in an empty plot of that colony. Harisuman Bisht narrated his story 'Tumne Kuchh Nahin Kaha Tha' based on the conditions of people living in slums and their expectations and disappointments from the structure of democracy. Nasira Sharma in her presidential address said in the current times it is more important to bring up the human aspect within the citizens and remain connected to ones roots rather than striving for a global dream.

Both the programmes were convened by Anupam Tiwari, Editor, Hindi. He thanked the participants and the audience on behalf of the Sahitya Akademi.

- Pallavi Prashant Holkar

Ministry of Culture
Government of India

साहित्य अकादेमी
(राष्ट्रीय साहित्य संस्थान)
संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार की स्वायत्तशासी संस्था
Sahitya Akademi
(National Academy of Letters)
An Autonomous Organisation of Government of India, Ministry of Culture

पल्लवी प्रशांत होळकर
सचिव

Pallavi Prashant Holkar
Secretary

प्रेस विज्ञप्ति

रचनाओं में मानवता का संदेश जरूरी – नासिरा शर्मा

पुस्तक मेले में साहित्य अकादेमी द्वारा दो कार्यक्रम आयोजित

नई दिल्ली, 11 जनवरी 2026। नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला में साहित्य अकादेमी द्वारा प्रतिदिन आयोजित किए जा रहे कार्यक्रमों की शृंखला में आज अकादेमी से पुरस्कृत दो लेखकों– मोहन सिंह (डोगरी) और रश्मि चौधरी (बोडो) ने पाठकों के साथ अपनी रचना प्रक्रिया साझा करने के साथ अपनी रचनाओं का पाठ भी किया। 'कहानी–पाठ' कार्यक्रम वरिष्ठ कथाकार नासिरा शर्मा की अध्यक्षता में संपन्न हुआ और उसमें – हरिसुमन बिष्ट और अवधेश श्रीवास्तव ने अपनी–अपनी कहानियों का पाठ किया। हॉल नं.– 2 स्थित 'लेखक मंच' में आयोजित पहले कार्यक्रम 'आमने–सामने' में प्रख्यात डोगरी कवि एवं नाटककार मोहन सिंह ने अपनी रचना प्रक्रिया के बारे में बताते हुए कहा कि मेरा कोई साहित्यिक बैकग्राउंड नहीं था सिनेमा देखकर मेरा रंगमंच से लगाव हुआ। प्रख्यात डोगरी लेखक केहरि सिंह मधुकर के संपर्क में आने के बाद मैं सही मायनों में साहित्य से जुड़ा। उन्हें सुनकर बहुत कुछ सीखा और उन्होंने ही सिखाया कि कविता वो है जो अपने अंदर से फूटती है। मेरी रचना में आम लोगों के मसले होते हैं। आगे उन्होंने कहा कि लेखन को व्यवसाय समझना गलत होगा। यह केवल सामाजिक बदलाव के लिए प्रयुक्त होना चाहिए। उन्होंने अपनी नज़्में 'घेरा', 'श्राप', 'माँ के मरने पर', 'पोतियाँ ऐसी ही होती हैं', 'साथ न छोड़ देना', 'पेड़ और आदमी' आदि प्रस्तुत कीं।

बोडो की प्रख्यात कवयित्री रश्मि चौधरी ने अपनी रचना प्रक्रिया के बारे में बताते हुए कहा कि मैं अपने वैवाहिक जीवन और बीमार पिता की परेशानियों को सहते हुए लेखन से जुड़ी। मैंने ग्रामीण महिलाओं के दुख, पीड़ा, नफरत, दयालुता आदि विषयों पर लेखन किया है। मेरी कविताएँ नारीवादी होती हैं। उन्होंने पहले अपनी कविता 'दरबार' बोडो में प्रस्तुत की। शेष कविताएँ– 'आँगन', 'अकेली', 'चिड़िया उड़ गई' और 'जीवन' हिंदी में प्रस्तुत कीं।

कहानी पाठ कार्यक्रम में अवधेश श्रीवास्तव ने 'खेल खेल में' कहानी प्रस्तुत की, जिसमें बच्चों और कुत्ते के पिल्लों के आपस के प्यार को दर्शाया गया है। हरिसुमन बिष्ट ने 'तुमने कुछ नहीं कहा था' कहानी प्रस्तुत की। यह कहानी गंदे नाले की समस्या पर होती राजनीति पर आधारित थी, जिसमे सही जन प्रतिनिधि के चुनाव की कसमकस को दिखाया गया है।

प्रख्यात लेखिका नासिरा शर्मा ने अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए कहा कि लेखक की यह परेशानी होती है कि वह किन मुद्दों को छोड़ें और किन मुद्दों को उठाये। लेखक जिंदगी के बहुत नजदीक से जुड़े मुद्दों को उठाता है। सियासत और मानवता की दृष्टि लेखक को अलग–अलग तरह से लिखने को मजबूर करती है और लेखक को इन दोनों के बीच संतुलन बनाते हुए लिखना पड़ता है। लेकिन यह जरूरी है कि रचनाओं में मानवता के संदेश जरूर बचा रहे।

कार्यक्रम के आरंभ में साहित्य अकादेमी संपादक (हिंदी) अनुपम तिवारी ने अतिथियों का अंगवस्त्र से अभिनंदन किया और उनका परिचय श्रोताओं से कराया।

– पल्लवी प्रशांत होळकर

रवींद्र भवन, 35 फ़ीरोज़शाह मार्ग, नई दिल्ली-110 001, दूरभाष : +91-11-23386626-28, फैक्स : +91-11-23382428
Rabindra Bhavan, 35 Ferozeshah Road, New Delhi-110 001, Phone: +91-11-23386626-28, Fax +91-11-2338 2428
E-mail: secretary@sahitya-akademi.gov.in, Website: http//www.sahitya-akademi.gov.in